PRACTICE PAPER-2 (SOLUTIONS)

CLASS: XII

SUBJECT : HINDI

खंड-अ

1. **1.** (अ) शिक्षा

2. (ब) उँगलियों पर गिनी जा सकने जीतनी है

3. (अ) सामाजिक दायित्व को नहीं

4. (स) आश्चर्य

5. (स) अक्षम्य

6. (अ) शिक्षा में

7. (अ) शिक्षा के

8. (अ) शिक्षकों में साधारण से लोगों में पाई जाने वाली योग्यता नहीं ढूँढने पर

9. (स) अवज्ञा और अनादर की दृष्टि से

10. (ब) शिक्षकों के कर्तव्य विमुख होने को

2. **1.** (ब) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता न होने को

2. (द) उपर्युक्त सभी

3. (द) विद्वान को महत्त्व नहीं दिया और सरल स्वभाव वाले का जीवन निर्वाह भी नहीं

4. (ब) असामाजिक तत्व

5. (अ) व्यक्तियों का स्वार्थ में डूबे होना

अथवा

1. (स) आज़ादी के पश्चात् निरंतर विकसित होता भारत

2. (ब) बाहर से कठोर किन्तु हृदय कोमल

3. (द) उपर्युक्त सभी

4. (ब) भारतीय सैनिकों को

5. (ब) भारत माता को

3. **1.** (ब) पत्रकारिता

2. (अ) नई सूचनाए प्रदान करना

3. (ब) स्तम्भ लेखन

4. (अ) खोज परक पत्रकारिता

5. (स) वाच डाग पत्रकारिता

4. **1.** (स) मुग्ध

2. (अ) बगुलों की पंक्ति को

3. (अ) बगुलों की पंक्ति ने

4. (ब) बगुलों की पंक्ति के विलुप्त होने

5. (अ) उमा शंकर जोशी

5. **1.** (अ) पेशे का

2. (ब) पेशा बदलने की

3. (द) उपर्युक्त सभी

4. (ब) पेशा बदलने की

5. (ब) पेशा परिवर्तन की अनुमति न मिलाना

6. **1.** (ब) दो पीढ़ियों का वैचारिक अंतर

2. (अ) आधुनिकता को

3. (ब) 25वीं

4. (स) 6 फरवरी 1947

5. (ब) आनंद

6. (स) संघर्ष

7. (अ) संघर्ष करते हुए विपरीत स्थिति को अपने अनुकूल बनाया जा सकता है

8. (स) ओम थानवी

9. (स) मुअनजो–दड़ो का

10. (स) पाकिस्तान के सिंध प्रांत में

खंड-ब

7. (अ) जब समाचार–पत्रों में सर्वसाधारण के लिए कोई सूचना प्रकाशित की जाती है तो उसको 'विज्ञापन" कहते हैं। यह सूचना नौकरियों से संबंधित हो सकती है, खाली मकान को किराये पर उठाने के संबंध में हो सकती है या किसी औषधि के प्रचार से संबंधित हो सकती है। कुछ लोग विज्ञापन के आलोचक हैं। वे इसे निरर्थक मानते हैं। उनका मानना है कि यदि कोई वस्तु यथार्थ रूप में अच्छी है तो वह बिना किसी विज्ञापन के ही लोगों के बीच लोकप्रिय हो जाएगी, जबकि खराब वस्तुएँ विज्ञापन की सहायता से प्रचलित होने के बावजूद अधिक दिनों तक टिक नहीं पाएँगी, परंतु लोगों की यह सोच गलत है, क्योंकि आज के युग में उत्पादों की संख्या दिनपर–दिन बढ़ती जा रही है, ऐसे में विज्ञापनों का होना अनिवार्य हो जाता है।

किसी अच्छी वस्तु की वास्तविकता से परिचय पाना आज के विशाल संसार में विज्ञापन के बिना नितांत असंभव है। विज्ञापन ही वह शक्तिशाली माध्यम है जो उत्पादक और 'उपभोक्ता' दोनों को जोड़ने का कार्य करता है। वह उत्पाद को उपभोक्ता के संपर्क में लाता है तथा माँग और पूर्ति में संतुलन स्थापित करने का

प्रयत्न करता है। पुराने जमाने में विज्ञापन मौखिक तरीके से होता था, जैसे–काबुल का मेवा, कश्मीर की जरी का काम, दक्षिण भारत के मसाले आदि।

उस समय आवश्यकता भी कम होती थी तथा लोग किसी वस्तु के अभाव की तीव्रता का अनुभव नहीं करते थे। आज समय तेजी का है। संचार क्रांति ने जिंदगी को 'स्पीड' दे दी है और मनुष्य की आवश्यकताएँ बढ़ती जा रही हैं। लोग जिस वस्तु की खोज में रहते हैं, विज्ञापन द्वारा ही उसे कम खर्च में सुविधा के साथ प्राप्त कर लेते हैं, यही विज्ञापन की पूर्ण सार्थकता है। विज्ञापन से व्यक्ति अपने व्यापार व व्यवसाय को फैला सकता है। अतः आधुनिक संसार विज्ञापन का संसार है। यदि हम किसी समाचार–पत्र या पत्रिका के पन्ने उलटते हैं तो विभिन्न प्रकार के विज्ञापन हमारा स्वागत करते हुए दिखाई देते हैं।

विभिन्न मुद्राओं के चित्र, भावपूर्ण शैली, लालसा व कौतूहल पैदा करने वाले विज्ञापनों के ढंग हमारा मन मोह लेते हैं। घर से निकलते ही सड़कों पर होर्डिंग्स आपको रुकने पर विवश कर देते हैं तो घर के अंदर टी०वी० हर समय आपको कोई–न–कोई उत्पाद दिखाता रहता है। यह विज्ञापन का संसार इतना आकर्षण पैदा करता है कि संयमी व चतुर भी इससे बच नहीं पाता। आज विज्ञापन एक व्यापार बन गया है। विज्ञापन द्वारा व्यापार बढ़ता है। किसी वस्तु की माँग बढ़ती है। विज्ञापन के सिर्फ लाभ ही हों, ऐसा नहीं है। इसके नुकसान भी हैं।

विज्ञापन व्यवसाय के विश्वास को डगमगा देता है। धूर्तता के कारण वस्तु या सेवा के हानिकारक पक्षों को नहीं दिखाया जाता। कंपनियाँ बिक्री बढ़ाने के चक्कर में अश्लीलता की तमाम हदें पार कर जाती हैं। सरकार को चाहिए कि ऐसे विज्ञापनों पर पूर्ण प्रतिबंध लगाए तथा दोषियों को सजा दे। भ्रामक विज्ञापनों के खिलाफ भी सख्त कार्यवाही होनी चाहिए।

(ब) खेल–कूद में रुचि बढ़ना देश के स्वास्थ्य का प्रतीक है, देशवासियों की समृद्धि का सूचक है। आजकल खेलों के प्रति दीवानगी बढ़ती जा रही है। इस दीवानगी को देखते हुए यह प्रश्न उठना लाजिमी है कि क्या यह भी स्वस्थ परंपरा का प्रतीक है? इसमें कोई दो राय नहीं कि पोषक भोजन के बिना मानव स्वस्थ नहीं रह सकता। यह भी उतना ही सच है कि अच्छे भोजन के साथ यदि मनुष्य खेलों में भाग न ले तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता।

अतः खेलों का नियमित अभ्यास करना स्वास्थ्य के लिए उतना ही आवश्यक है जितना कि संतुलित भोजन। वैसे तो जीवन की सफलता के लिए शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों में से कोई भी एक शक्ति किसी से कम महत्वपूर्ण नहीं है। फिर भी आम जनमानस में प्रचलित उक्ति है कि 'स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का विकास होता है'। इसलिए शरीर को पूर्ण रूप से स्वस्थ व चुस्त बनाने के लिए कई प्रकार के शारीरिक अभ्यास किए जाते हैं, किंतु इनमें खेल–कूद सबसे प्रमुख हैं।

बिना खेल–कूद के जीवन अधूरा रह जाता है। कहा गया है–"सारे दिन काम करना और खेलना नहीं, यह होशियार को मूर्ख बना देता है।" अतः खेलों से हमारा जीवन अनुशासित और आनंदित होता है। खेल भावना के कारण खिलाड़ी सहयोग, संगठन, अनुशासन एवं सहनशीलता का पाठ सीखते हैं। खेलने वालों में संघर्ष करने की शक्ति आ जाती है। खेल में जीतने की दशा में उत्साह और हारने की स्थिति में सहनशीलता का भाव आता है।

खेलते समय खिलाड़ी जीत हासिल करने के लिए अनुचित तरीके नहीं अपनाता और पराजय की दशा में प्रतिशोध की आग में नहीं जलता। उसमें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का भाव होता है। खेल मनोरंजन का माध्यम भी हैं। खिलाड़ियों अथवा खेल–प्रेमियों–दोनों को खेलों से भरपूर मनोरंजन मिलता है। जो लोग सदैव काम में लगे रहते हैं खेलों के मनोरंजन से वंचित रह जाते हैं वे खेलों से मनुष्य अनुशासित जीवन जीना सीखता है। इससे मनुष्य नियमपूर्वक कार्य करने की शिक्षा लेता है।

नियमपूर्वक कार्य करने से व्यवस्था बनी रहती है तथा समाज का विकास होता है। इस प्रकार खेलों का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। ये हमारे जीवन को संपन्न व खुशहाल बनाते हैं। इनके महत्व को देखते हुए हमें खेलों से अरुचि नहीं रखनी चाहिए

(स) 'भ्रष्टाचार' शब्द 'भ्रष्ट + आचार' दो शब्दों के योग से बना है। 'भ्रष्ट' का अर्थ है–मर्यादा से हटना या गिरना और 'आचार' का अर्थ है–आचरण। अर्थात जब व्यक्ति अपनी वैयक्तिक, पारिवारिक तथा सामाजिक मर्यादा का उल्लंघन करके, स्वेच्छाचारी हो जाता है तो उस दशा में उसे 'भ्रष्टाचारी' कहते हैं। भारत में अनेक समस्याएँ हैं। इन समस्याओं से मानवता दिन–प्रति–दिन दम तोड़ रही है। विकास हो रहा है, बड़े–बड़े कारखाने बन रहे हैं, भीड़ बढ़ रही है, परंतु आदमी छोटा होता जा रहा है, क्यों? क्योंकि भ्रष्टाचार का दानव हर क्षेत्र में उसे दबोच रहा है।

भ्रष्टाचार अनेक रूपों में विद्यमान हैय जैसे–रिश्वत, तस्करी, कालाबाजारी तथा भाई–भतीजावाद आदि। आज यह जीवन की हर परत में विद्यमान है। पुराने समय में मर्यादा तोड़ने वाले व्यक्ति का हुक्का–पानी बंद कर दिया जाता था, परंतु आज हुक्का–पानी बंद करने वाले भ्रष्टाचार से कुछ ज्यादा ही ओत–प्रोत हैं। भ्रष्टाचार के मूल कारणों की खोज करें तो पता चलता है कि भौतिकवाद के कारण जीवन–मूल्यों में परिवर्तन आ गया है। आज हम विज्ञान की दुहाई देकर भौतिकवादी दर्शन के भक्त बन गए हैं।

शिक्षा व विकास के नाम पर हमें अनेक सुविधाएँ चाहिए। फलतः धन के सहित अयोग्यता भी योग्यता बन जाती है। ऐसे में भ्रष्टाचार का बढ़ना स्वाभाविक है। तत्कालीन व्यवस्था आपाद–मस्तक भ्रष्टाचार से ओत–प्रोत है। बहती गंगा में सभी हाथ धो रहे हैं। प्रश्न यह है कि इस भ्रष्टाचार रूपी दानव का खात्मा कैसे हो? इस प्रश्न के समाधान के लिए हमें स्वयं से शुरुआत करनी होगी। हमें वैयक्तिक जीवन में होड़ से बचना होगा।

सामाजिक स्तर पर उपेक्षा भी सहनी पड़ सकती है क्योंकि जब तक सामाजिक दर्शन तथा स्तर पर सुधार नहीं होगा, भ्रष्टाचारी गलत तरीकों से धन उपार्जित करके समाज में प्रतिष्ठा पाता रहेगा और भौतिक सफलताओं की सीढ़ी पर चढ़ता जाएगा। सामाजिक स्तर पर ऐसे व्यक्तियों का बहिष्कार या उपेक्षा करनी होगी। सच्चे व ईमानदार व्यक्ति को वर्ग, जाति, आर्थिक दशा के स्तर पर भेदभाव किए बिना सम्मानित करना होगा। राजनीतिक स्तर पर पहल करनी होगी। चुनाव जीतने के लिए अपनाए जाने वाले भ्रष्ट तरीकों पर लगाम लगानी होगी।

संस्थाओं को चंदा काला धन छिपाने के लिए दिया जाता है। ऐसे दान को भी रोकना पड़ेगा। कानून को इतना सक्षम बनाना होगा कि वह भ्रष्टाचारी की पद–प्रतिष्ठा को एक ओर रखते हुए तुरंत कठोर दंड देने में सक्षम हो। व्यक्ति को चाहिए कि वह स्वयं को परिवार के स्तर से उठाकर समाज व राष्ट्र से जोड़े तथा अपने कार्य की सीमा को विस्तृत करे।

(द) मानव सभ्यता के विकास के साथ जीवनयापन में कठिनाई आती जा रही है। आज जीवन–यापन के साधन अत्यंत महँगे होते जा रहे हैं। इस कारण परिवारों का निर्वाह मुश्किल से हो रहा है। इस समस्या का मूल खोजने पर पता चलता है कि जनसंख्या–वृद्धि के अनुपात में जीवनोपयोगी वस्तुओं एवं साधनों में वृद्धि नहीं हुई है। अतः हर देश में परिवारों को छोटा रखने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। किंतु छोटे परिवार के साथ सुख–दुख दोनों जुड़े हैं। हालाँकि छोटे परिवार के सुखी होने के पीछे अनेक तर्क दिए जाते हैं।

सर्वप्रथम, छोटे परिवार में सुखदायक संसाधन आसानी से उपलब्ध कराए जा सकते हैं। यदि कोई कठिनाई आती है तो उसका निराकरण अधिक कठिन भी नहीं होता। बड़े परिवार के लिए स्थितियाँ अत्यंत विकट हो जाती है। आधुनिक समय में रोजगार, मकान आदि की व्यवस्था बेहद महँगी होती जा रही है। इन्हीं सब कारणों से छोटा परिवार सुखी माना जाता है। परिवार छोटा होने पर हर सदस्य को आयु के अनुसार सुविधाएँ उपलब्ध करवाई जा सकती हैं। सभी को पौष्टिक भोजन, तन ढकने को अच्छा वस्त्र और रहने के लिए साफ–सुथरा आवास दिया जा सकता है।

शिक्षा व स्वास्थ्य का भी पूरा ध्यान रखा जा सकता है। यह उचित व्यवस्था ही उस परिवार के सुख का कारण बनती है। इसके विपरीत, बड़े परिवार में चाहे वह कितना ही संपन्न क्यों न हो, हरेक के लिए सुविधाएँ नहीं जुटा सकता। सभी के लिए उचित व पौष्टिक आहार, वस्त्र, आवास की व्यवस्था कर पाना संभव नहीं। पढ़ाई–लिखाई का खर्च उठा पाना भी दूर की कौड़ी जैसा ही है। हालाँकि ऐसा नहीं है कि छोटे परिवार के सिर्फ सुख ही हैं, दुख नहीं।

छोटे परिवार में सुविधाएँ होती हैं, परंतु अपनापन नहीं होता। छोटे परिवार का व्यक्ति सामाजिक नहीं हो पाता। वह अहं भाव से पीड़ित होता है। इसके अलावा, बीमारी या संकट के समय जहाँ बड़े परिवार की जरूरत होती है, छोटा परिवार कभी खरा नहीं उतरता। इसमें वैयक्तिकता का भाव मुखर होता है, जबकि बड़े परिवारों में प्रेम–भावना, जिम्मेदारी, स्नेह, दुलार मिलता है। बच्चों में बढ़ती हिंसक प्रवृत्ति, मादक द्रव्यों का सेवन आदि प्रवृत्तियाँ छोटे परिवारों की देन हैं। इन सबके बावजूद, आज के वातावरण में आम व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार ही परिवार का विस्तार करना चाहिए। छोटे परिवार के साथ ही जीवन को सहज ढंग से जिया जा सकता है, अन्यथा निरंतर दुख झेलते हुए, जीते जी मर जाने के समान है।

8. (क) किसी भी विषय पर लिखने से पूर्व अपने मन में उस विषय से संबंधित उठने वाले विचारों को कुछ देर रुककर एक रूपरेखा प्रदान करें। उसके पश्चात् ही शानदार ढंग से अपने विषय की शुरुआत करें। विषय को आरंभ करने के साथ ही उस विषय को किस प्रकार आगे बढ़ाया जाए, यह भी मस्तिष्क में पहले से होना आवश्यक है. जिस विषय पर लिखा जा रहा है, उस विषय से जुड़े अन्य तथ्यों की जानकारी होना भी बहुत आवश्यक है। सुसंबद्धता किसी भी लेखन का बुनियादी तत्व होता है। सुसंबद्धता के साथ–साथ विषय से जुड़ी बातों का सुसंगत होना भी जरूरी होता है। अतः किसी भी विषय पर लिखते हुए दो बातों का आपस में जुड़े होने के साथ–साथ उनमें तालमेल होना भी आवश्यक होता है। नए तथा अप्रत्याशित विषयों के लेखन में आत्मपरक 'मैं' शैली का प्रयोग किया जा सकता है।

(ख) रेडियो नाटक को अंधेरे का नाटक भी कहा जाता है। क्योंकि इसका मंचन अदृश्य होता है या यह भी कहा जा सकता है कि इसे देखा नहीं जा सकता सिर्फ सुना ही जा सकता है। भाषा, संवाद, ध्वनि एवं संगीत का रेडियो नाटक में विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए ।

पात्रों की सीमित संख्या–रेडियो नाटक में पात्रों की संख्या सीमित होनी चाहिए। इसमें पात्रों की संख्या से 5-6 अधिक नहीं होनी चाहिए क्योंकि इसमें श्रोता केवल ध्वनि के सहारे ही पात्रों को याद रख पाता है। यदि रेडियो नाटक में अधिक पात्र होंगे तो श्रोता उन्हें याद नहीं रख सकेंगे।

भावभंगिमाओं के स्थान पर ध्वनि प्रभावों और संवादों को प्रभावी बनाया जाना चाहिए

(ग) कहानी की कथावस्तु को समय और स्थान के आधार पर विभाजित किया जाना चाहिए । कहानी में घटित विभिन्न घटनाओं के आधार पर दृश्यों का निर्माण किया जाना चाहिए । कथावस्तु से संबंधित वातावरण की व्यवस्था की जानी चाहिए । ध्वनि और प्रकाश व्यवस्था का ध्यान रखा जाना चाहिए ।कथावस्तु के अनुरूप मंच सज्जा और संगीत का निर्माण किया जाना चाहिए । पात्रों के द्वंद्व को अभिनय के अनुरूप परिवर्तित किया जाना चाहिए, संवादों को अभिनय के अनुरूप स्वरूप प्रदान किया जाता है, अतः कथानक को अभिनय के अनुरूप स्वरूव प्रदान किया जाना चाहिए।

9. (क) वस्तुपरकता को भी तथ्यपरकता से आँकना आवश्यक है। वस्तुपरकता और तथ्यपरकता के बीच काफ़ी समानता भी है लेकिन दोनों के बीच के अंतर को भी समझना ज़रूरी है। एक जैसे होते हुए भी ये दोनों अलग विचार हैं। तथ्यपरकता का संबंध जहाँ अधिकाधिक तथ्यों से है वहीं वस्तुपरकता का संबंध इस बात से है कि कोई व्यक्ति तथ्यों को कैसे देखता है ? किसी विषय या मुद्दे के बारे में हमारे मस्तिष्क में पहले से बनी हुई छवियाँ समाचार मूल्यांकन की हमारी क्षमता को प्रभावित करती हैं और हम इस यथार्थ को उन छवियों के अनुरूप देखने का प्रयास करते हैं।

वस्तुपरकता की अवधारणा का संबंध हमारे सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक मूल्यों से अधिक है। हमें ये मूल्य हमारे सामाजिक माहौल से मिलते हैं। वस्तुपरकता का तकाज़ा यही है कि एक पत्रकार समाचार के लिए तथ्यों का संकलन और उसे प्रस्तुत करते हुए अपने आकलन को अपनी धारणाओं या विचारों से प्रभावित न होने दे।

(ख) एक पत्रकार के लिए निष्पक्ष होना भी बहुत ज़रूरी है। उसकी निष्पक्षता से ही उसके समाचार संगठन की साख बनती है। यह साख तभी बनती है जब समाचार संगठन बिना किसी का पक्ष लिए सचाई सामने लाते हैं। पत्रकारिता लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। इसकी राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में अहम भूमिका है। लेकिन निष्पक्षता का अर्थ तटस्थता नहीं है। इसलिए पत्रकारिता सही और गलत, अन्याय और न्याय जैसे मसलों के बीच तटस्थ नहीं हो सकती बल्कि वह निष्पक्ष होते हुए भी सही और न्याय के साथ होती है।जब हम समाचारों में निष्पक्षता की बात करते हैं तो इसमें न्यायसंगत होने का तत्व अधिक अहम होता है। आज मीडिया एक बहुत बड़ी ताकत है। एक ही झटके में वह किसी की इज़्ज़त पर बट्टा लगाने की ताकत रखती है। इसलिए किसी के बारे में समाचार लिखते वक्त इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि कहीं किसी को अनजाने में ही बिना सुनवाई के फाँसी पर तो नहीं लटकाया जा रहा है।

(ग) हर समाचार में शामिल की गई सूचना और जानकारी का कोई स्रोत होना आवश्यक है। यहाँ स्रोत के संदर्भ में सबसे पहले यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि किसी भी समाचार संगठन के स्रोत होते हैं और फिर उस समाचार संगठन का पत्रकार जब सूचनाएँ एकत्रित करता है तो उसके अपने भी स्रोत होते हैं। इस तरह किसी भी दैनिक समाचारपत्र के लिए पीटीआई (भाषा), यूएनआई (यूनीवार्ता) जैसी समाचार एजेंसियाँ और स्वयं अपने ही संवाददाताओं और रिपोर्टरों का तंत्र समाचारों का स्रोत होता है। लेकिन चाहे समाचार एजेंसी हो या समाचारपत्र, इनमें काम करने वाले पत्रकारों के भी अपने समाचार स्रोत होते हैं। यहाँ हम एक पत्रकार के समाचार के स्रोतों की चर्चा करेंगे।

समाचार की साख को बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि इसमें शामिल की गई सूचना या जानकारी का कोई स्रोत हो और वह स्रोत इस तरह की सूचना या जानकारी देने का अधिकार रखता हो और समर्थ हो। कुछ जानकारियाँ बहुत सामान्य होती हैं जिनके स्रोतों का उल्लेख करना आवश्यक नहीं है। लेकिन जैसे ही कोई सूचना 'सामान्य' होने के दायरे से बाहर निकलकर 'विशिष्ट' होती है उसके स्रोत का उल्लेख आवश्यक हो जाता है। स्रोत के बिना उसकी साख नहीं होगी। एक समाचार में समाहित सूचनाओं का स्रोत होना आवश्यक है और जिन सूचना का कोई स्रोत नहीं है, उसका स्रोत या तो पत्रकार स्वयं है या फिर यह एक सामान्य जानकारी है जिसका स्रोत देने की आवश्यकता नहीं है।

10. (क) बच्चों का बाल सुलभ मन अपनी कल्पनाओं को पतंग की डोर के साथ बांधकर आसमान की ऊंचाइयों तक पहुंचाने की कोशिश करता हैं। पतंग के पीछे दौड़ते–भागते बच्चों का शरीर भी उनके मन जैसा ही कोमल व लचीला होता है।पतंग उड़ाने के लिए इधर उधर दौड़ते–भागते बच्चों को यह भी पता नहीं रहता है कि उनके नीचे की जमीन कठोर है अथवा मुलायम – वें पतंग उड़ाते हुए छत के एकदम किनारे तक पहुंच जाते है, जहां से वो नीचे भी गिर सकते हैं,किन्तु बच्चें अपने खेल में इतने तल्लीन हो जाते है कि उन्हें गिराने और चोट लगाने का भी भय नहीं लगता। लेकिन उनका पूरा ध्यान अपनी उस पतंग पर ही रहता है जो आसमान की ऊंचाइयों पर लहरा–लहरा कर उनके दिलों को एक नये उत्साह, उमंग व खुशी से भर देती हैं और उनकी बाल सुलभ कल्पनाओं को साकार करती है। इस कविता के माध्यम से कवि ने यह बताने की कोशिश की है कि बच्चों का पतंग से कितना गहरा नाता होता है।

(ख) तुलसी के समय उनके कुछ विरोधी भी थे जो तुलसी से विरोध रखते थे। तुलसी ने अपने विरोधियों को संबोधित करते हुए कहते है कि समाज मुझे चाहे धूर्त कहे या पाखंडी, संन्यासी कहे, जाति से राजपूत कहे अथवा जुलाहा कहे, मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता। मुझे किसी के बेटी से अपने बेटे का विवाह नहीं करना और न ही किसी की जाति बिगाड़नी है अर्थात मैं संत–संन्यासी हूं, मुझे सामाजिक व्यवहार से कोई सरोकार नहीं। मै तो सिर्फ इतना जानता हूं कि मैं अपने प्रभु राम का दास हूँ , जिसे जो अच्छा लगे, वह कहे। मुझे तो माँगकर खाना है, मस्जिद में सोना है. मुझे किसी से न कुछ लेना है और न किसी को कुछ देना है।

(ग) भोर के समय आसमान शंख के समान गहरा नीला लगता है। भोर का आकाश ऐसा जान पड़ता है मानो नील शंख हो। प्रातःकाल वातावरण में नमी होती है। वातावरण में नमी के प्रभाव को कवि ने राख से लीपा हुआ कोई चौका के रूप में प्रस्तुत किया है।

सूर्य क्षितिज से ऊपर उठता है तो सूर्य की लालिमा युक्त किरणे मटमैले कोहरे पर पड़ती है तो ऐसा जान पड़ता है जैसे काली रंग की सिल पर किसी ने लाल केसर घोलकर उंढेल दी हो। उपमान बदलकर यह भी कहा जा सकता है जैसे काली स्लेट पर किसी ने लाल खड़िया मिट्टी मल दिया हो।

जैसे ही सूर्य क्षितिज से ऊपर उठता है, सूर्य की लालिमायुक्त किरणें पीत वर्णी हो जाती है और आकाश बिलकुल नीला दिखाई देने लगता है, जब नीले आकाश पर सूर्य की पीली किरणों का प्रभाव ऐसा जान पड़ता है जैसे किसी जलाशय में कोई गौर वर्णी नायिका की देह झिलमिला रही है – सूर्योदय होते ही कुछ क्षण पूर्व तक प्रकृति जो रंग परिवर्तित कर रही थी, वें सारे रंग विलुप्त हो जाते हैं। इसी को कवि ने जादू टूटना कहा है।

11. (क) कवि का ह्रदय प्रेम भाव से परिपूर्ण है वह इसी प्रेम भाव को प्रकट करता है और प्रेम को ही अपनी अर्जित सम्पति मान कर प्रेम ही बांटता है – उसकी कविता में उसके मन के प्रेम भाव प्रकट होते हैं। कविता में प्रकट उसके प्रेम भाव उसकी ओर से लोगों को दी गई भेंट है।

(ख) जब साहित्यकार के मन में एक विशिष्ठ वर्ग से मान, सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्ति का प्रलोभन जाग्रत हो जाता है, तब ऐसा साहित्यकार जन सामान्य द्वरा समझी जानेवाली भाषा की उपेक्षा कर किसी विशिष्ठ वर्ग द्वारा समझी जानेवाली भाषा को अपने काव्य सृजन में प्रयुक्त करता है, ऐसी स्थिति में कोई बात पेचीदा हो जाती हैं –

(ग) कवि सुख–दुःख को जीवन की स्वाभाविकता मानानते है –सुख–दुःख के सम्मिलन से जीवन पूर्ण होता है– इसीलिए वें दुःख को बिना गिला, शिकवा शिकायत के वैसे ही स्वीकार करते जैसे सुख को स्वीकार किया था। न सुख से अति उत्साहित हो और न दुःख से निराश हो। सुख–दुःख दोनों को समान भाव ग्रहण करे। दोनों परिस्थितियों में मनुष्य को समान व्यवहार करना चाहिए।

12. (क) बाजार की आकर्षक वस्तु के प्रभाव में आकर ग्राहक अनावश्यक खरीददारी करने के लिए विवश हो जाता है, इसी को बाज़ार का बाजार का जादू कहा गया हैं। बाजार का जादू तब प्रभाव दिखलाता है जब मन खाली हो और जेब भरी हो। मन में निश्चित भाव न होने के कारण ग्राहक हर वस्तु को आवश्यकता की समझने लगता है तथा अधिक आराम व शान के लिए गैर जरूरी चीजें खरीद लेता है। वस्तु खरीदने के बाद उसे पता चलता है कि फ़ैसी चीजें आराम में मदद नहीं करतीं, बल्कि खलल पैदा करती हैं। परंतु उसके स्वाभिमान को सेंक मिल जाता है।

(ख) इन्दर सेना पर पानी फेंकना इस भाव को उद्घाटित करता है कि जब तक हम किसी को कुछ देंगे नहीं अर्थात त्याग नहीं करेंगे, तब तक अभीष्ट को कैसे पा सकते हैं। इंद्र देवता को पानी का अर्घ्य चढ़ाना दान का प्रतीक है और दान वह होता है जिसमे परमार्थ की भावना हो –अपने पास से एक बाल्टी पानी देकर सबके लिए पानी मांगना इसी भावना द्योतक है।

(ग) अम्बेडकरजी ऐसे आदर्श समाज की कल्पना करते है जो भाईचारा, स्वतंत्रता और समता पर आधारित हो। सभी को विकास के समान अवसर मिलें तथा जातिगत भेदभाव न हो। सभी को अपनी रुचि अथवा कौशल के अनुसार कार्य चुनने की स्वतंत्रता हो समाज समानता पर आधारित हो।

13. (क) लछमिन की सास का व्यवहार सदैव भेदभाव पूर्ण रहा। जब उसने लछमिन को मायके यह कहकर भेजा कि "तुम बहुत दिन से मायके नहीं गई हो, जाओ देखकर आ जाओ" तो यह उसके लिए अप्रत्याशित था। उसके पैरों में पंख से लग गए थे। खुशी–खुशी जब वह मायके के गाँव की सीमा में पहुँची तो लोगों ने फुसफुसाना प्रारंभ कर दिया कि 'हाय! बेचारी–.... अब आई है लछमिन।" लोगों की नजरों से सहानुभूति झलक रही थी। उसे इस बात का आभास नहीं था कि उसके पिता की मृत्यु हो चुकी है। किन्तु लोगों के असहज व्यवहार से वह अप्रिय कल्पना से आशंकित हो गई और गाँव की सीमा में पहुँचते ही लछमिन के पैरों के पंख झड़ गए–

(ख) पहलवान के दोनों बेटे गाँव में फैली महामारी की चपेट में आकर चल बसे। इस घटना से गाँव वालों की हिम्मत टूट गई क्योंकि लुट्टन मृत गाँव में संजीवनी शक्ति भरने के उद्देश्य से संध्या से सूर्योदय तक ढोलक बजाता था, जिससे गाँव वालों की शक्तिहीन आँखों में दंगल का दृश्य नाचने लगता था –स्पंदन शून्य स्नायुओं में बिज़ली दौड़ जाती थी किन्तु पहलवान के दोनों बेटों की मृत्यु की खबर सुनकर गाँव वालों को लगा कि बेटों की मौत के सदमे के कारण अब लुट्टन ढोलक नहीं बजाएगा–यदि वह ढोलक नहीं बजाएगा तो गाँव के लोगों को संबल कौन देगा, यह सोचकर गाँव वालों की हिम्मत टूट गई।

(ग) शिरीष को देखकर द्विवेदीजी को गांधीजी की याद आई क्योकि शिरीष बाहय परिवर्तन–धूप, वर्षा, आँधी, सभी विषम परिस्थितियों में अविचल खिला रहता है। इसी भांति गांधी भी अंग्रेजी हुकूमत में मार–काट, अग्निदाह, लूट–पाट, खून–खराबे के बवंडर के बीच अपने सत्य और अहिंसा के आदर्श पर स्थिर रह सके थे। जैसे शिरीष वायुमंडल से रस खींचकर विषम स्थितियों में भी कोमल होते हुए भी कठोर बना रहता है, वैसे ही गांधी भी सिद्धांतों के प्रति कठोर किन्तु भावनात्मक रूप से कोमल ह्रदय वाले थे। शिरीष भी अवधूत है और गाँधी भी–दोनों ही एक ही प्रेरणा देते है कि आत्मबल, शारीरिक बल से कहीं ऊपर की चीज है।